एक काल्पनिक समय की दुनिया

कहानी 3050

मोहम्मद जफर एवं प्रवीण पाठक

मंच पर सन्नाटा है, फिर धीरे से सूत्रधार का आगमन होता है।

सूत्रधार- हाँ तो दोस्तों, आप सभी को मेरा नमस्कार, आज मैं आपको ले चलूँगा एक नई दुनिया में, क्या आप मेरे साथ चलेंगे? वह नई दुनिया है सन् 3050 की यानी अब से हज़ार साल से भी आगे की। तो चलिए अब देर नहीं करते हैं और चलते हैं 3050 की दुनिया में। (सूत्रधार के हटते ही गड़-गड़ से बादल गरजने की आवाज़ होती है, और एक कलाकार भागता हुआ आता है। इधर-उधर भागता है फिर बड़ी तेज़ी से चिल्लाते हुए और अपने हाथ पैर के गलने का सा भाव दिखाते हुए गिर जाता है।)

सूत्रधार- अरे ये कौन गिरा पड़ा है? (चौंकते चिल्लाते हुए) अरे ये तो डिजिटल प्रसाद है, अरे बाप रे..... इसका शरीर तो गल रहा है। डिजिटल उठो-उठो क्या हुआ तुम्हें, उठो डिजिटल, उठो.....(दो तीन बार उसे उठाने की कोशिश करता है) अरे .....अरे.....ये.....ये.....ये तो मर गया! आखिर ये सब हुआ क्या? कैसे मर गया ये? कुछ (थोड़ा घबरते डरते हुए) बादलों के गड़गड़ाने की आवाज़ आई और कुछ गिरते ही उसके हाथ पैर गलने लगे? क्या था वह? क्या गिरा आसमान से? आइए हम पता करते हैं कि आखिर ये हुआ क्या और इन सब के लिए शुरू से देखते हैं कहानी और चलते हैं पाटिल साहब के घर में। तो पाटिल साहब के घर से शुरुआत से जानते हैं कि 3050 में दुनिया का क्या हाल है? कैसे हैं लोग? कैसा है संसार? और क्या हुआ था डिजिटल को?

(लाइट्स ऑफ होती हैं और मंच से सूत्रधार जाता है और पाटिल साहब का आगमन होता है? पाटिल साहब अपने घर में कीबोर्ड पर हाथ चलाने का अभिनय करते हैं तभी दरवाज़े की घन्टी बजती है।)

भिखारी- अरे कोई है क्या बाबा?

पाटिल साहब- ओ! फोह! अब कौन आया? काम भी सुकून से नहीं हो पाता।

भिखारी- अरे घर में कोई है क्या? कुछ खाने को दे दो..... बहुत भूख लगी है।

पाटिल- अरे यार..... ये भिखारी भी, कभी भी कहीं से भी आ जाते हैं। अरे आ रहा हूँ। आ रहा हूँ भाई। (दरवाज़े की और बढ़कर दरवाज़ा खोलने का अभिनय करते हुए) क्या चाहिए?

भिखारी- अरे बाबा दो दिन से कुछ नहीं खाया बहुत भूखा हूँ कुछ खाने को दे दो ना।

पाटिल- खाने को, अच्छा रुक अभी मैं प्रोटीन के चिप्स लाता हूँ। चलेगा?

भिखारी- अरे प्रोटीन के चिप्स नहीं। नहीं भाई, अभी पिछले ही हफ्ते खाया था .....वो मुझे कुछ हज़म नहीं हुआ? अब तो कुछ और दे दो भाई। बड़ी उम्र हो आपकी?

पाटिल- अरे एक तो दे रहा हूँ उस पर तू ड्रामा कर रहा है। और कुछ नहीं है। तो जा फिर।

भिखारी- अरे भाई फिर से देख लो बाबा? हो सकता है कुछ और भी हो तुम्हारे पास।

पाटिल- अच्छा अच्छा। ठीक है, तो मेरे पास विटामिन के चॉकलेट हैं, वो चाहिए या नहीं?

भिखारी- विटामिन के चॉकलेट, हाँ वो चलेंगे! मगर कितना परसेन्ट विटामिन होगा?

ज़रा देख के बताना, वो पैकेट पर लिखा होगा।

पाटिल- हाँ हाँ देख रहा हूँ रुक ना.....90% है? ठीक। चलेगा ना?

भिखारी- क्या बाबूजी, बस 90 परसेन्ट वाला ही रखते हो कभी ज्यादा वाला नहीं रखते?

पाटिल- देख भाई .....लेना हो तो ले इससे ज़्यादा मेरे पास नहीं है? एक तो दे रहा हूँ ऊपर से तू बातें मार रहा है।

भिखारी- अरे नहीं रे बाबा? भला हो आपका? चलो मेरे दो हफ्ते का जुगाड़ हो गया, आपके कम्प्यूटर, वाई फाई में सदा कनेक्टिविटी बनी रहे.....उसमें कभी भी वायरस ना लगें।

(भिखारी जाता है, लाइट्स ऑफ और सूत्रधार का आगमन? लाइट्स जलती हैं?)

सूत्रधार- तो देखिए, उस समय के भिखारी कैसे हो गए होंगे वे कनेक्टिविटी की दुवाएँ दे रहे होंगे? और लोग फल सब्जी नहीं खाएँगे केवल प्रोटीन के चिप्स और विटामिन की चॉकलेट खाएँगे और सीधे पोषक तत्वों से पेट भरेंगे। खैर चलते हैं अब देखते हैं उस समय के बच्चे कैसे होंगे? तो चलिए चलते हैं एक बार फिर पाटिल साहब के घर और देखते हैं क्या रहा? उनका एक बेटा है चिंकू जो अभी-अभी स्कूल से आया है।

(पाटिल साहब आते हैं तभी दरवाज़े की घन्टी बजती है।)

पाटिल साहब- यार...अब पता नहीं कौन आ गया? (उठ कर फिर से दरवाज़ा खोलते हैं)

चिंकू- हैलो पापा! कैसे हैं आप?

पाटिल साहब- अच्छा हूँ बेटे, पर तू आज स्कूल से जल्दी कैसे आ गया?

चिंकू- वो पापा आज हमारा ट्रिप था आज चिल्ड्रेन्स डे हैना, सो हम सब घूमने गए थे।

पाटिल साहब- ओ .....हाँ आज तो बाल दिवस है, तो आज स्कूल में क्या हुआ?

चिंकू- पापा आज स्कूल में कुछ नहीं हुआ था। आज तो हम गए थे म्यूज़ियम में।

पाटिल साहब- हाँ! अरे वाह! तो तुमने वहाँ क्या-क्या देखा?

चिंकू- हमें वहाँ कुछ चीज़ें दिखाई गईं थीं? कुछ गुज़रे ज़माने की, बीते समय के लोगों की चीज़ें? जैसे एक लाल-लाल चीज़ थी जिसके ऊपर कुछ हरे रंग का कैप जैसा था? और उसके नीचे कुछ टो, टो कर के लिखा था....? वो कुछ ओल्ड वेजिटेबल्स नाम से थीं?

पाटिल- ओ .....टो.....यानी टोमैटो होगा, यानी टमाटर।

चिंकू- हाँ टोमैटो। और पापा ऐसी ही कुछ और चीज़ें दिखाई गई थीं। जैसे एक लम्बा-लम्बा पतला ग्रीन सा भी था, चिली नाम से।

पाटिल- हाँ बेटे, वो चिली यानी मिर्च थी। ये सब वेजिटेबल्स थीं यानि सब्ज़ियाँ। मेरे दादाजी बताते थे कि उनके दादा जी के दादा जी के दादा जी के पुरखों के ज़माने में ये सब खाए जाते थे।

चिंकू- खाए जाते थे? (चौंक कर) पापा तो अब ये क्यों नहीं मिलते?

पाटिल- अरे बेटे अब ये सब खत्म हो गए? और वैसे भी अब तो हम लोग सीधे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और विटामिन की चीज़े खाते हैं या सीधे टेबलेट्स और इंजेक्शन से ले लेते हैं।

चिंकू- हाँ पापा सही है? अब तो सब आसान है?

पाटिल- हाँ बेटे? अगर होतीं भी तो कौन बनाता उन्हें? जानते हो उनको बनाने में कितना कुछ करना पड़ता था? छीलो, काटो पकाओ .....हैं नहीं तो। अब दुनिया, टेक्नोलॉजी सब आगे हैं ना। अब हम वापस तो नहीं जा सकते ना? और फिर ये सब अब बचे कहाँ? अच्छा छोड़ .....ये बता और क्या क्या देखा?

चिंकू- पापा इसके अलावा हमने फॉसिल देखे। वो टॉम ऐन्ड जेरी हैं ना वैसे ही फॉसिल थे।

पाटिल- अच्छा चूहे और बिल्ली? यानी तुमने रैट और कैट के फॉसिल देखे।

चिंकू- तो पापा ये रैट और कैट क्या थे?

पाटिल- बेटे इन्हें एनिमल्स यानी जानवर कहते थे हम? हाँ बेटे ये पहले बहुत सारे होते थे। पर अब खत्म हो गए।

चिंकू- तो पापा ये रहते कहाँ थे?

पाटिल- बेटे ये हमारे साथ, हमारे घरों में रहते थे? मेरे दादा बताते थे कि कभी ये हमारे जीवन का हिस्सा हुआ करते थे? हमारे आस पास रहते थे और जैसे रोबोट वाचमैन है ना वैसे कुत्तों को भी रात का वाचमैन कहा जाता था? पर अब तो ये हैं ही नहीं दुनिया में।

चिंकू- पापा मेरा वो दोस्त है ना मैटू वो ना स्किन जैकेट पहने बिना म्यूज़ियम के बाहर चला गया तो उसकी पूरी स्किन जल गई। वो हेल्प हेल्प चिल्लाता रहा फिर उसे रोबोगार्ड्स और सर ने मिलकर बचाया?

पाटिल- क्या? (डरकर) अरे बाप रे.... बेटा तुम अपनी जैकेट कभी मत उतारना। तुम्हें पता है ना उस जैकेट के बिना अल्ट्रा वायलेट रेज़ हमें जला देंगी?

(लाइट्स ऑफ़ और पाटिल का जाना होता है? फिर सूत्रधार फिर से आता है और लाइट्स ऑन।)

सूत्रधार- तो ये है उस समय का बचपन? यानी बच्चे सब्ज़ियों को म्यूज़ियम में देख रहे हैं और चूहे बिल्ली के फॉसिल देख रहे हैं। वाह क्या कर दिया हमने धरती का? और देखिए अल्ट्रावॉयलेट किरणों से उसके दोस्त के हाथ जल गए। कितनी खतरनाक बात हुई। ओज़ोन परत नाम मात्र की है और बिना स्किन जैकेट के बचना ही मुश्किल है? खैर चलिए देखते हैं कि और कहाँ क्या हो रहा है। तो ताज़ा खबर है कि चाँद पर कुछ हँगामा हो रहा है। आइए, चलते हैं चाँद पर।

(चार लोग भीड़ में आ रहे हैं और आगे उनका नेता चाँद कुमार आ रहा है? चारों कार्यकर्ता नारे लगा रहे हैं?)

रिपोर्टर- जीहाँ तो आप देख रहे हैं कि चाँद पर हँगामा हो रहा है। चाँद बचाओ समिति के नेता चाँद कुमार यहाँ आन्दोलन कर रहे हैं। आखिर क्यों हो रहा है ये हंगामा? आइए उनसे बात करते हैं और जाते हैं इसकी तह में।

पत्रकार- चाँदकुमार जी बताइए कि आप किन माँगों को लेकर आन्दोलन कर रहे हैं?

चाँद कुमार- ये पृथ्वी के लोग हमारे यहाँ आ आकर बस रहे हैं। पहले रिसर्च के बहाने घूमते हैं। फिर स्टेशन बनाते हैं और फिर अपनी कॉलोनियाँ बसा रहे हैं। हमारा पानी, पेड़-पौधे, और बाकी संसाधन खत्म कर दिए अब हमारे चाँद का पानी और संसाधन खत्म कर रहे हैं । हम इसका विरोध करते हैं। क्यों भाइयों।

कार्यकर्ता1- अरे पृथ्वी वालों वापस जाओ।

कार्यकर्ता 2, 3 व 4 - वापस जाओ, वापस जाओ।

रिपोर्टर- आप पृथ्वी वालों के दुश्मन बने हैं मगर आपके पूर्वज भी तो पृथ्वी से ही आए थे।

चाँद कुमार- (झेंपते हुए) आए थे....बिल्कुल आए थे लेकिन हमारे लोगों ने इस चाँद को मेहनत से संवारा। वो तो काफी पहले आ गए थे। हम लोग यहाँ बसने वाले पहले लोगों में से हैं। इस चाँद को हमने बसाया है। तो हम अब इसके रखवाले हैं। और विनाशक पृथ्वी वालों को यहाँ अब फटकने नहीं देंगे, क्यों भाइयों।

कार्यकर्ता 1, 2, 3, 4- हाँ हाँ ..... पृथ्वी वालों वापस जाओ.....

रिपोर्टर- म.....मगर ये..... पूरी गैलेक्सी तो सभी की है .....कोई भी कहीं भी रह सकता है?

चाँद कुमार- (गुस्से में) तुम बहुत बोल रहे हो। तुम्हारा गैलेक्सी टाइम्स चैनेल भी पृथ्वी पर है ना, ...(कार्यकर्ताओं से) ज़रा समझाओ तो इसे ..... बहुत बोल रहा है। बहुत सवाल मार रहा।

कार्यकर्ता 1, 2 व 3- मारो ..... पीटो ..... इसे ..... भगाओ यहाँ से।

(फ्रीज़ होते हैं और लाइट्स ऑफ़ होती है। फिर सूत्रधार का प्रवेश।)

सूत्रधार- अरे बाप रे। चाँद का माहौल तो बहुत खराब हो गया। हमने नदियों की, ज़मीन की लड़ाई देखी, सुनी थी अब तो आलम यह है कि पृथ्वी तबाह कर के लोग चाँद को भी उजाड़ने में लग गए। और वहाँ चाँद पे हक़ की लड़ाई छिड़ी है। इससे अच्छा तो हम पाटिल साहब के ही घर चलते हैं। वहाँ अभी उनके दोस्त आने वाले हैं। तो देखते हैं क्या हो रहा है। (सूत्रधार जाता है और लाइट्स ऑफ़। पाटिल के घर पर दरवाज़े की घण्टी बजती है। नेपथ्य से आवाज़ आती है 'टिंगटोंग')

पाटिल- ओ लगता है सब आ गए।, आ रहा हूँ, आ रहा हूँ।

पीपी- और पाटिल भाई .....(खुशी से) कैसे हो।

डिजिटल- हाय यारा ....?

मॉडम- ओहो ब्रो .....क्या हो रहा?

पाटिल- अरे बढ़िया हूँ दोस्तों। (सबसे हंसते हुए हाथ मिलाता है और गले मिलता है) आओ चलो अन्दर।

(तभी मॉडम का फोन बजता है। टिंग टिंग)

मॉडेम - हैलो .....हैलो ..... हाँ.....

पाटिल- ये और इसका फोन यार।

मॉडम- अरे मामाजी। हाँ कहाँ पर हैं? जुपिटर पर, हाँ सुनिए..... वहाँ से स्लो रॉकेट पकड़ लीजिए। नहीं नहीं फास्ट रॉकेट नहीं पकड़िएगा ..... वो तो सीधे दूसरी गैलेक्सी में उतारेगा। अरे ..... सुनिए तो ....उसका स्टॉप नहीं है मिल्की वे में। और हाँ स्लो रॉकेट पकड़ के आप पृथ्वी में एशिया पे उतर जाइएगा हाँ ....एशिया का टिकट लीजिएगा। वहाँ कहीं भी उतरिए.....मैं आपको ले लूँगा। (फोन काटता है)

पाटिल- किसका फोन था?

मॉडम- अरे जुपिटर वाले मामा जी का फोन था वो दूसरी गैलेक्सी जा रहे थे अब पृथ्वी पर उतर रहे हैं। हैं..... इनका भी ये अजीब नाटक है.....यार।

डिजिटल- अरे ठीक है कुछ काम होगा?

मॉडम- अरे यार, वो अपने लड़के के लिए लड़की देखने दूसरी गैलेक्सी जा रहे हैं, तो बीच में यहाँ आ रहे हैं।

पाटिल- अरे ठीक है यार रिश्तेदार हैं, चल आने दे .....छोड़ हम तो मज़ा करते हैं।

पीपी- अरे चिंकू नहीं दिख रहा? कहाँ है?

पाटिल- बुलाता हूँ। अरे चिंकू..... देखो अंकल लोग बुला रहे हैं।

(चिंकू भागता हुआ आता है।)

चिंकू- हाय अंकल .....कैसे हैं आप लोग?

पीपी- अरे चिंकू बेटे हम लोग तो अच्छे हैं। तू बता कैसा है?

चिंकू- मैं भी बहुत अच्छा हूँ अंकल। खेल रहा था। अच्छा मैं ना आप लोगों से एक पहेली पूछूँ?

डिजिटल- अरे हाँ हाँ बेटे।

चिंकू- अंकल बड़ारोबो और माइक्रोरोबो दोनों खेल रहे हैं। तो कुल कितने लोग खेल रहे हैं?

दोस्त- पता नहीं बेटे। दोही तो होंगे?

चिंकू- सिम्पल, बड़ा रोबो और माइक्रोरोबो दोनों यानि दो माइक्रोरोबो और एक बड़ा रोबो.....टोटल तीन।

सभी- (ठहाका लगा कर हँसते हैं, हा हा हा) हद है।

(ज़्यादा हंसने से ऑक्सीजन की कमी से सबकी साँसें फूलने लगती हैं, उखड़ने लगती हैं। कुछ लोग जमीन पर गिर कर लोटते हैं। और कुछ झुक कर, गर्दन और छाती पकड़ते हैं।)

सूत्रधार भाग कर आता है और उन सबको ऑक्सीजन गैस किसी उपकरण से मुंह के पास देता है।

(सभी फ्रीज़)

सूत्रधार- तो ये हालत हो गई है कि ऑक्सीजन की कमी से आदमी ठीक से हँस भी नहीं सकता क्योंकि पेड़-पौधों का विनाश हो चुका है। लोग सिलिंडरों के भरोसे सांस लेते हैं।

सभी- आज तो बच गए। सही वक्त पर उसने ऑक्सीजन दे दी।

पाटिल- हाँ यार... वरना तो गए थे।

(तभी एक आवाज़ आती है सब ध्यान से सुनने लगते हैं)

नेपथ्य से- सावधान सावधान .....ये आकाशवाणी है। सभी को सूचित किया जाता है कि घर से बाहर ना निकलें आज तेज़ाबी बारिश होने की सम्भावना है। आप के शरीर को नुकसान हो सकता है। जान माल की हानि हो सकती है।

सभी डरते हैं पर डिजिटल हँसता है।

पाटिल- अरे यार अच्छा है तुम लोग अभी गए नहीं..... चलो यहीं रुक जाओ।

डिजिटल- हह....अरे यार सब बकवास है, आज तक मौसम विभाग की जानकारी ठीक हुई है कभी?

सभी- अरे रुक जा डिजिटल अगर सही हुई तो, रुक जा यार।

पाटिल- हाँ यार रुक जा। इतनी भी क्या जल्दी भाई। और ये क्या अकड़ हुई भला।

डिजिटल- अरे तुम लोग डरपोक हो, देखना अभी वहीं मैं खुले मैदान पर क्रिकेट खेलूँगा ..... देखना।

(सब रोकते हैं मगर डिजिटल बाहर चला जाता है। थोड़ी दूर जाते ही बादल गरजने की आवाज़ आती है।)

डिजिटल ऊपर देख के डर जाता है और इधर उधर भागता है मगर बारिश शुरू हो जाती है। और उसका शरीर गलने लगता है। डिजिटल अपने हाथ शरीर देख कर चिल्ला रहा है।)

डिजिटल- बचाओ- बचाओ.....आ..... आ..... बचाओ .....धीरे धीरे झुक कर (गलने की एक्टिंग करते हुए नीचे लेट जाता है। वो तेज़ाब की बारिश में भीग कर मर जाता है)

इतने में सूत्रधार आता है और उसको चिल्ला कर उठाने की कोशिश करता है। (पहले दृश्य की पुनरावृत्ति होती है)

सूत्रधार- अरे देखो .....ये तो गल गया .....तेज़ाबी बारिश से गल गया। .....बेचारा.....इसने मौसम विभाग की भविष्यवाणी नहीं मानी और देखो उसकी मौत हो गई। उफ़ तो इतनी खतरनाक स्थिति हो गई है ..... ये... .. ये क्या? क्या इतना डरावना है हमारा भविष्य? क्या सांस लेना, बाहर बारिश में घूमना भी नहीं मुमकिन होगा? उफ़ क्या बना दिया हमने धरती को। अगर .....अगर हमें ऐसी स्थिति नहीं आने देनी है तो हमें अभी से जागना होगा। अभी से एक एक व्यक्ति को चेतना होगा। हमारी पृथ्वी, हमारा अपना प्यारा पर्यावरण बचाना होगा और खूब पेड़ लगाने होंगे, नदियों को बचाना होगा और प्रदूषण को रोकना होगा। तो आइए हम संकल्प करें कि हम खूब पेड़ लगाएँगे और पर्यावरण बचाएँगे।

(सभी कलाकार मंच पर आते हैं और एक दूसरे का हाथ पकड़ कर ऊपर उठाते हैं।)

• श्री मोहम्मद जफर
अजीम प्रेमजी फाउंडेशन
महिमानंद कुरियल भवन, भटवारी रोड, उत्तरकाशी 249 193 (उत्तराखण्ड)
[मो. : 9456593088 एवं 09889456233;
ई-मेल : mohammadzafar78@gmail.com]
• श्री प्रवीण पाठक
होमीभाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन
निकट अनुशक्ति नगर डिपो, वी एन पुरा मार्ग, मानखुर्द 400 088 (मुंबई)
[मो. : 09869869489;
ई-मेल : praveen2600@gmail.com]